

Contents

| | | | |
|----------|----------------------|-------------------|----------|
| 1 | rAma | candraM | 2 |
| 2 | rAjIvalocanaM | | 3 |
| 3 | dAsharathE | | 4 |
| 4 | rAma | janArdhana | 5 |
| 5 | dInabandho | | 6 |
| 6 | pAhi | mAM | 7 |

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित
नोटू स्वर साहित्यम् (राम)

1 rAmacandraM

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित
नोटू स्वर साहित्यम् (राम)
रामचन्द्रम्

रागम्: शङ्कराभरणम् (२१) ताळम्: चतुरश्च एकम्

रामचन्द्रं राजीवाक्षं श्यामलाङ्गं शाश्वतकीर्ति
कोमलहस्तं कोसलराजं मामकहृत्कमलागारम्
मारुतियुक्तं धीमन्तं मानितभक्तं श्रीमन्तं
कौमारवरं गुरुगुहमित्रं कारुण्यनिधिं दशरथपुत्रम्
भूमिसुतापं भूपतिरूपं कोमलपल्लवपादं मोदं
कामगुरुं सीतारामं कौस्तुभमूषं वन्देऽहम् ॥

◊ ◊ ◊ ◊ ◊ ◊ ◊ ◊ ◊ ◊

2 rAjIvalocanaM

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित

नोट्टु स्वर साहित्यम् (राम)

राजीवलोचनम्

रागम्: शङ्कराभरणम् (२१) ताळम्: तिश्र एकम्

राजीवलोचनं रामचन्द्रं रामानुजाग्रं राजेन्द्रं

सद्गुणसान्द्रं कृपापाङ्गं सद्गुरुगृहमुदितं शान्तम्

रावणान्तकं जनकसुतारमणं भक्तभरणं

परमघनश्यामकं श्रीरघुकुलतिलकाभरणम्

भरतशत्रुघ्नसोदरं विमीषणविनुतपदं

सुग्रीवप्रमुखादिनुतपादपङ्कजं कौसल्यात्मजम्

कोदण्डकरं अहल्यादेवीशापविमोचनसुचरित्रं

कौस्थुमधारिणं कैवल्यप्रदं दशरथात्मजं भजेऽहम् ॥

◊ ◊ ◊ ◊ ◊

3 dAsharathE

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित

नोट्टु स्वर साहित्यम् (राम)

दाशरथे

रागम्: शङ्कराभरणम् (२१) ताळम्: तिश्र एकम्

दाशरथे दीनबन्धो दानवभीकर दामोदर

केशव मामव सीताधव केयूरहार रघुवीर

कोमलपादाञ्जा कोदण्डराम श्यामळविग्रह संपूर्णकाम

नामकीर्तने सदामोद नारदवीणाहळादाहळाद ॥



4 rAma janArdhana

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित

नोट्टु स्वर साहित्यम् (राम)

राम जनार्दन

रागम्: शङ्कराभरणम् (२९) ताळम्: तिश्र एकम्

रामजनार्दन रावणमर्दन रामानुजाग्रज राजविभो

पामरमोचन पङ्कजलोचन भक्तजनप्रिय पालय माम्

भूमिजानायक भुक्तिप्रदायक भूसुरपालन भूमिपते
श्यामलविग्रह शान्त गुरुगुहसंमत श्रीरामचन्द्रप्रभो ॥



5 dInabandho

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित

नोट्टु स्वर साहित्यम् (राम)

दीनबन्धो

रागम्: शङ्कराभरणम् (२९) ताळम्: तिश्र एकम्

दीनबन्धो दयासिन्धो सुधीमणे मे मूदं देहि सदा देहि

जानकीनायकाम्मोजानन साधुसंरक्षणा -

पाङ्गाखिलदेवतासार्वभौमादिवन्दज गुरुगुहनुत ॥



6 pAhi mAM

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचित

नोट्टु स्वर साहित्यम् (राम)

पाहि मां जानकीवल्लभ

रागम्: शङ्कराभरणम् (२९) ताळम्: तिश्र एकम्

पाहि मां जानकीवल्लभ श्रीहरे भारतीशप्रियानन्तमूर्ते

देहि मे संपदं दीनचिन्तामणे देव देवोत्तमानन्दकीर्ते
एहि काकुत्स्थ कोदण्डहस्त ईप्सितार्थप्रदाह कादचित् ॥

